एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 02, अंक: 01 (जनवरी-फरवरी, 2022)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

मशरूम की खेती के जरिए अपनी कमाई को बढ़ा सकते हैं किसान,

युवा भी पा सकते हैं रोजगार...

प्रेरक-संपादकीय

किसान/युवा चाहे तो मशरूम की खेती करके अच्छी कमाई कर सकते हैं। मशरूम के शोधकर्ता डॉक्टर सरदार सिंह ककरालिया तथा उनके साथियों (शेर-ए-कश्मीर कृषि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, पादप रोग विज्ञान विभाग, जम्मू-180009) ने बताया कि बदलते मौसम के कारण खेती में लगातार आ रही समस्याओं से निपटने के लिए, मशरूम की खेती को आमदनी का बढ़िया जरिया बनाया जा सकता हैं। क्योंकि इसके लिए जमीन की आवश्यकता नहीं होती हैं। कम उत्पादन वाले या बिना खेत वाले किसान भी कर सकते हैं, उत्पादन विधि से पहले यह जानना जरूरी है कि मशरूम कितने तरह के होते हैं तथा इनकी खेती कैसे की जा सकती है क्योंकि भारत की अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से कृषि पर आधारित है। वर्तमान में जीडीपी में कृषि क्षेत्र का लगभग 14 प्रतिशत है और ग्रामीण आबादी का लगभग 80 प्रतिशत योगदान अपनी आजीविका चलाने के लिए कृषि और उससे संबंधित व्यवसाय पर निर्भर है।

भारत में प्रति हेक्टेयर औसत आय दुनिया के विकसित देशों की तुलना में बहुत कम है। वर्तमान संदर्भ में कृषि क्षेत्र से आय बढ़ाने की आवश्यकता है ताकि इसे अधिक आकर्षक बनाया जा सके कृषि में वर्तमान और भावी पीढ़ियों के हित को बनाए रखने के लिए यह आवश्यक है की विभिन्न कृषि आधारित उद्योगों में मशरूम की खेती उद्यमों में से एक है, उन्होंने कहा कि मशरूम की खेती ही एकमात्र ऐसी खेती है जिसे आप घर के अंदर, झोपड़ी या किसी भी अन्य जगह पर भी कर सकते हैं उनकी भूमि का आकार कुछ भी क्यों ना हो मशरूम की खेती एक मजबूत है जिनमें किसानों की मौजूदा आय के स्तर को दोगुना करने की व्यापक क्षमता है और यह उद्यम आसानी से किसी भी श्रेणी के किसानों द्वारा अपनाया जा सकता है। आजीविका में विविधता लाने और किसानों के जीवन को मजबूत बनाने का मतलब है। मशरूम को प्रारंभिक फसलों की तुलना में बहुत कम लागत और अपेक्षाकृत कम समय में उगाया जा सकता है। इस उद्यम को अपनाने के लिए किसानों को बहुत मजबूत निवेश इनपुट, अनिवार्य प्रशिक्षण और काम करने की प्रतिबद्धता की आवश्यकता होती है। खेती के लिए संसाधन आसानी से उपलब्ध है और कभी-कभी संबंधित एजेंसियां द्वारा कम लागत या बिना लागत के प्रदान किए जाते हैं इसके अलावा मशरूम की खेती सीमित मात्रा में प्राकृतिक संसाधन जैसे कि पानी और जमीन का उपयोग करती है जोकि क्षेत्र में की जाने वाली खेती अन्य फसलों की तुलना, मशरूम की खेती बड़े पैमाने पर खेती के अलावा कुटीर और छोटे स्तर पर की जा सकती है। मशरूम की खेती न केवल कृषि के विविधीकरण को बढ़ावा देती है, बल्कि गुणवत्ता, भोजन, स्वास्थ्य और पर्यावरण संबंधी समस्याओं को दूर करने में भी मदद करता है।

मशरूम की खेती पूरे साल किसानों द्वारा की जा सकती है और किसान इस उद्यम से अच्छा लाभ प्राप्त कर सकते हैं। अपने निरंतर और प्रतिबंध प्रयासों के माध्यम से कृषि वैज्ञानिकों ने मशरूम के ऐसे उपभेद विकसित किए हैं जो कि विभिन्न तापमान और जलवायु की परिस्थितियों में पूरे वर्ष उगाए जा सकते हैं। मशरूम की विभिन्न प्रजातियां में बटन मशरूम, ओयस्टर, मिल्की और धान पुआल मशरूम शामिल है इनमें से बटन मशरूम सबसे

लोकप्रिय है, जो किसानों द्वारा विभिन्न कृषि आधारित अवशेषों जैसे गेहूं के भूसे, धान के पुआल, गन्ना बैगेज, सूखी सब्जी के पत्ते, चुरा आदि पर सफलतापूर्वक उगाए जा सकते हैं। इनके लिए अधिकांश कृषि अवशेष किसान के खेत में आसानी से उपलब्ध होते हैं या पास के खेतों से व्यवस्थित किए जा सकते हैं। बटन मशरूम की खेती उत्तर भारत में प्रचलित है जबकि भारत में डिंगरी और धान पुआल मशरूम मशरूम की खेती को किसी भी कमरे में उचित वेंटिलेशन की सुविधा के साथ इंडोर किया जा सकता है। मशरूम की खेती के बारे में तकनीकी जानकारी कृषि विभाग, कृषि विश्वविद्यालय, कृषि विज्ञान केंद्र के कृषि विभाग के अधिकारियों से किसानों द्वारा प्राप्त की जा सकती है या किसी भी गैर सरकारी संगठनों से भी प्राप्त की जा सकती है। इसके अलावा समाचार पत्र, निदेशालय मशरूम अनुसंधान सोलन (हिमाचल) की वेबसाइट से ली जा सकती है। मशरूम अनुसंधान निदेशालय के वैज्ञानिकों ने एक एप्लीकेशन भी विकसित किया है '**मशरूम की खेती**' जो किसी भी स्मार्टफोन पर आसानी से डाउनलोड की जा सकती हैं।

मशरूम की खेती के संबंध में क्षेत्र विस्तार अधिकारियों की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि उनके पास मशरूम की खेती को उद्यम के रूप में अपनाने के लिए किसानों को समझाने और प्रेरित करने की जिम्मेदारी है। चिंतित एजेंसियां को मशरूम उत्पादक सफल इकाइयों के लिए इच्छुक किसानों की एक्सपोज़र विजिट आयोजित करानी चाहिए ताकि उन्हें मशरूम की खेती को अपनाने के लिए आसानी से प्रेरित किया जा सके साथ ही 'देखने का विश्वास है' कृषक समुदाय से अपील है। केंद्रीय और राज्य दोनों स्तरों पर मशरूम की खेती सहित विभिन्न कृषि उद्यमों को शुरू करने के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करने वाले विभिन्न कार्यक्रम की शुरुआत की गई है। कृषि अर्थशास्त्रियों ने मशरूम की खेती की लागत लाभ विश्लेषण का काम किया है जो बटन मशरूम की खेती में 1:2 बताया गया है और डिंगरी मशरूम में यह अधिक है। इसमें कोई संदेह नहीं है लाभ का यह मार्जिन अन्य फसलों की तुलना में बहुत अधिक है।

इसके अलावा मशरूम की खेती एक संपूर्ण पारिवारिक उद्यम है जिसमें पुरुष, बच्चे और महिलाएं भी योगदान दे सकते हैं। उचित योजना के द्वारा किसानों को मशरूम की खेती के लिए बहुत कम समय देने की आवश्यकता होती है और वह अधिक लाभ कमा सकते हैं। मशरूम का बाजारीकरण समस्या नहीं है, इसे आसपास के बाजारों में सीधे उपभोक्ताओं को आसानी से बेचा जा सकता है। मशरूम का उपयोग अचार, बिस्किट, नगेट्स जैसे मशरूम के उचित मूल्य वर्धित उत्पाद भी उत्पादकों द्वारा अंत के मौसम के दौरान तैयार किए जा सकते हैं। जो आगे लाभ के मार्ग में जुड़ते हैं। स्थानीय बाजारों में मशरूम की बिक्री किसानों को एक अतिरिक्त आय का स्रोत प्रदान करती है और सबसे कमजोर ग्रामीण घरों की खाद्य सुरक्षा को मजबूत बनाती है। सूखे मौसम में यह और भी स्पष्ट है, जब पानी की कमी अन्य फसलों के उत्पादन की चुनौती देती है।

आज के समय सरकार भी जैविक खेती को बढ़ावा देने के लिए कई योजनाएं चला रही हैं, तो किसान भाइयों को इन योजनाओं का लाभ उठाकर अपनी आमदनी को बड़ा सकते है।